© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

# गणपति सम्भवम् महाकाव्य में गणशासनोत्कर्ष का समीक्षात्मक अध्ययन

**बिन्दू साहू**

**(जे.आर.एफ.), शोधच्छात्रा, संस्कृत विभाग,**

**नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय**

**कोटवाँ जमुनीपुर दुबावल, इलाहाबाद**

**शोध आलेख सार –** कवि प्रभुदत्त शास्त्री द्वारा रचित **'गणपति सम्भवम्'** महाकाव्य भक्तिपरक है । यही कारण है कि इसका प्रकाशन कवि ने गणतन्त्र दिवस पर किया । गणपति सम्भवम् पुराण आदि ग्रन्थों में आंशिक रूप में समुपलब्ध गणेश की कथा का कवि ने स्व कल्पना द्वारा परिवर्धन व परिवर्तन का एक नवीन रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है . यह महाकाव्य दस सर्गों में निबद्ध है। किन्तु दशम् सर्ग में कवि वंश का परिचय कवि ने दिया है । इसमें देव गणेश जी की सैशवावस्था में गणपतित्व पद की प्राप्ति तक की कथा सन्निहित है। पद-पद में वर्तमान राष्ट्रीय चेतना समुद्भावित है । वस्तु, नेता, रस का युगानुरूप वर्णन कवि की काव्यशास्त्रीय प्रतिभाव्यक्त करती है । इस महाकाव्य का वस्तु विन्यास काव्य शास्त्र रीति से महाकाव्योंचित है । काव्यात्मभूत ध्वनि-रस-रीति गुण-अलंकार- विम्ब विधान आदि की उत्तम योजना है ।

**मुख्य शब्द –** प्रभुदत्त शास्त्री, गणपति सम्भवम्, महाकाव्य, भक्तिपरक, ध्वनि,रस,रीति, गुण, अलंकार,विम्ब।

संस्कृत जगत का यह परम सौभाग्य है कि उसमें आज के युग में भी ऐसे महाकाव्य लिखने वाले विद्वान मौजूद हैं । कवि कुलगुरु कालिदास के **'कुमारसम्भवम्'** की परम्परा में लिखा हुआ शायद ही कोई महाकाव्य किसी को देखने में आया हो । वस्तुत: **'कुमारसम्भवम्'** महाकाव्य ही गणपति के स्वरूप की उत्कण्ठा सा कर रहा था कुमार जैसा भैया अपने बड़े भाई की कीर्ति करने वाले को काव्य पाकर ही तो प्रसन्न हो सकता है ।

कवि प्रभुदत्त शास्त्री द्वारा रचित **'गणपति सम्भवम्'** महाकाव्य भक्तिपरक है । यही कारण है कि इसका प्रकाशन कवि ने गणतन्त्र दिवस पर किया । गणपति सम्भवम् पुराण आदि ग्रन्थों में आंशिक रूप में समुपलब्ध गणेश की कथा का कवि ने स्व कल्पना द्वारा परिवर्धन व परिवर्तन का एक नवीन रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है . यह महाकाव्य दस सर्गों में निबद्ध है। किन्तु दशम् सर्ग में कवि वंश का परिचय कवि ने दिया है । इसमें देव गणेश जी की सैशवावस्था में गणपतित्व पद की प्राप्ति तक की कथा सन्निहित है। पद-पद में वर्तमान राष्ट्रीय चेतना समुद्भावित है । वस्तु, नेता, रस का युगानुरूप वर्णन कवि की काव्यशास्त्रीय प्रतिभाव्यक्त करती है । इस महाकाव्य का वस्तु विन्यास काव्य शास्त्र रीति से

महाकाव्योंचित है । काव्यात्मभूत ध्वनि–रस–रीति गुण–अलंकार– विम्ब विधान आदि की उत्तम योजना है । महाकाव्य के नामकरण से अन्तिम पद्य तक दिखाई देती है ।

गणपति देव की उत्पत्ति का ज्ञान कराने वाला महाकाव्य **'गणपति सम्भवम्'** के प्रणेता चार्य प्रभुदत्त शास्त्री जी प्रकाण्ड विद्वान थे । उनका जन्म 1892 में फाल्गुन मास शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि गुरुवार के दिन राजस्थान की अलवर नामक नगरी की पश्चिम दिशा में स्थित ततारपुर में हुआ । यह स्थल राजाओं की वीरगाथाओं के वीर गाथाओं का स्मरण दिलाने वाला एवं विविध मन्दिरों से सुशोभित है । प्रपितामह शालिग्राम मिश्र एवं पितामह श्री रामप्रताप एवं उनके पुत्र रामशरण थे जो कवि प्रभुदत्त शास्त्री जी के पिता थे ।

गणेश शिवजी और पार्वती के पुत्र हैं उनका वाहन **डिंक नाम मूषक** है । गणों के स्वामी होने के कारण उनका एक नाम गणपति भी है । ज्योतिष में इनको केतु का देवता माना जाता है और जो भी संसार के साधन है उनके स्वामी गणेश जी हैं । हाँथी जैसा शिर होने के कारण उन्हें गजानन भी कहते हैं गणेश जी का नाम हिन्दू शास्त्रों के अनुसार किसी भी कार्य के लिए पहले पूज्य है । इसलिए इन्हें प्रथमपूज्य भी कहते हैं । गणेश की उपासना करने वाला सम्प्रदाय गाणपत्य कहलाता है ।

गणपति आदिदेव है जिन्होंने हर युग में अलग अवतार लिया उनका शारीरिक संरचना में भी विशिष्ट एवं गहरा अर्थ निहित है शिवमानस पूजा में श्री गणेश को प्रणव (ओउम्) कहा गया है । इस एकाक्षर ब्रह्म में उपर वाला भाग गणेश का मस्तक नीचे का भाग उदर चन्द्रबिन्दु लड्डू और मात्रा सूड है ।

गणपति जी के स्वरूप का वर्णन करते हुए आचार्य प्रभुदत्त ने स्पष्ट रूप से लिखा है– जो सौभाग्य को उन्नति दे, जो सभी जनता के आनन्द को कमल खिलाये और जो उनके मकानों में रहने और शयन का सुख दे, जो दुर्भाग्य को नष्ट करे, जो दारिद्र्य को भगाये जो अन्न सदा पैदा कराये, जो नङ्गे लोगों को कपड़ा देकर ढके वह गणतन्त्र शासन है, उससे भिन्न शासन नाशकारी भ्रष्टाचार का आसन है–

**यत्र स्याद रणतन्त्रमेव मियो मुष्टिप्रहारप्रियम् ।**
**न स्यान्मुष्टिकरं समागतजनग्रन्थिस्यवितस्य वा ।।**
**चेतस्तुष्टिकरं सुपुष्टिकरणं स्नेहस्य देहस्य वा ।**
**तत् प्रोक्तं गणशासनाऽपरं पदं गजाननं शासनम् ।। 15 ।।**

आज के भारत में लक्ष्मी वसाता है, जिसमें गणेश का मुख गुप्त है । अतएव जिसकी छटा शुभ है वह **गजानन का गणतन्त्र शासन** है ।

हमारे विचार में तो गण शासन में यह गणपति का ही प्रभाव स्फुटित हुआ है जो संतान रोकने के ज्ञान के विषय को अनेक तरह से फैलाया जा रहा है । किन्तु गणेश ने तो सन्तति निरोध को संयम गमन की शान्ति स्त्री के ग्रहण करने में अनादर, सन्तान ग्रहण से दूर रहने आदि से किया, वे तो उत्तम ब्रह्मचर्य के रक्षक थे ।

**नूनं चाऽत्र सुशासने गणपतेर्मन्ये प्रभावोऽस्फुरत्**
**यत् सन्तत्य वरोधेवोध विषयो नाना विधं तन्यते ।।**
**चक्रे किन्तु स संयमै रूपशमै दरिग्राऽनाग्रहैः ।**
**सन्तानग्रहतः परस्थितिधरः सन् ब्रह्मचर्येश्वरः ।।23।।**

अनेक बच्चों की विपत्तियों से लड़ते हुए लोगों को रात-दिन देखकर लोक में प्रकाश करते हुए भी ये दोनों भैया नित्य हंसते रहते हैं । यदि इन दोनों को याद करते हुए गणशासन चले या इनकी कथा को याद करते हुए स्त्री और पुरुष 'लूपादि' से बुद्धि वैभव को वृथा न लुटाये ।।

**नानापत्यं विपत्ति भी रणरता नालोक्यं नक्तं दिनम् ।**
**लोकोडऽलोककरी प्रहासनिरतो द्वौ भ्रातरौ मित्यशः ।।**
**स्मृत्वै तौ गणशासनं यदि चले दाकर्णयेद्वा कथाम् ।**
**ना स्या 'ल्लूपक' लुप्त बुद्धि विभवः स्त्रीणां नराणांगण ।। 25।।**

**शास्त्री जी कहते हैं कि – भगवान श्री गणेश के स्वरूप में छिपे हैं सुखी जीवन के सूत्र**- भगवान श्री गणेश के स्वरूप का ध्यान करने से ही सारे विघ्नों का अन्त हो जाता है इसीलिए उन्हें विघ्न विनाशक भी कहते हैं । हिन्दू धर्मग्रन्थों में भगवान श्री गणेश के स्वरूप की कई स्थानों पर व्याख्या है । इन व्याख्यों में बताया गया है कि श्री गणेश और उनके स्वरूप में कौन - कौन सी विशेष बाते हैं, जिन्हें मनुष्यों को अपनाना चाहिए 'गणेश चतुर्थी' के इस पावन अवसर पर हम आपको बताने जा रहे श्री गणेश जी पावन स्वरूप की कुछ ऐसी ही बातें 'विशेष है गजमस्तक' भगवान श्री गणेश गजानन है यानि जिनका मुख गज अर्थात् हाथी के समान है । श्री गणेश के बड़े शिर से यह शिक्षा मिलती है कि व्यक्ति को हमेशा बड़ा सोचना चाहिए । तभी उसके कर्म भी बड़े होंगे । गजमुख स्वरूप में बड़े कानों का भी बड़ा महत्व है भगवान श्री गणेश के कानों से सीख मिलती है कि व्यक्ति को कोई ही बात हमेशा हर बार गौर से सुनना चाहिए ।

भगवान श्री गणेश जिन वस्तुओं को धारण करते हैं वे भी विशेष हैं । भगवान श्री गणेश का स्वरूप चार भुजाधारी है – यानि उनके चार हाथ हैं । इन चार हाथों में एक में कुल्हाड़ी, दूसरे में रस्सी, तीसरे में मोदक और चौथा हाथ आशीर्वाद की मुद्रा में है । कुल्हाड़ी का अर्थ- सभी बन्धनों को काटने की ओर इंगित करता है । रस्सी का मतलब है कि अपनो को करीब रखो ताकि सबसे मुश्किल लक्ष्य प्राप्त करने में आसानी हो । मोदक साधना का फल है यश का अर्थ मेहनत से पाई सफलता है । चौथा हाथ भक्तों की ओर आशीर्वाद स्वरूप है जो लक्ष्य की ओर आगे बढ़ने का आशीर्वाद देता है ।

भगवान श्री गणेश के गज स्वरूप में सूंड का अर्थ है कि क्षमता और किसी को अपनाने की इच्छा शक्ति मनुष्य में होनी चाहिए । जिनमें ये गुण नहीं होते, वे मनुष्य अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में कठिनाई महसूस करते हैं वही एकदन्त का बहुत सीधा सा मतलब है कि व्यक्ति को हमेशा अच्छे गुणों को अपने पास रखना चाहिए और अनावश्यक व दुर्गुणों को खुद से दूर कर देना चाहिए ।

भगवान श्री गणेश का बड़ा पेट शान्तिपूर्वक जिन्दगी के अच्छे और बुरे अनुभवों को पहचानने का संकेत है श्री गणेश की प्रतिमा या चित्रों में मूषक अवश्य रूप से होता है । मूषक श्री गणेश का वाहन है । और श्री गणेश के स्वरूप में अवश्य ही दिखाई देता है । मूषक का तात्पर्य सच्चे सेवक से है । एक ऐसा वाहन जिस पर आप हावी है न कति वाहक आप पर ही हावी हो जाये ।

हिन्दू धर्म में कोई भी शुभ कार्य करने से पहले भगवान गणेश का पूजन जरूर किया जाता है । गणपति को बुद्धि समृद्धि में पहचाना जाता है देशभर में 'गणेश चतुर्थी' का पर्व धूमधाम से मनाया जाता है जिसे **विनायक चतुर्थी** भी कहा जाता है । पुराणों के अनुसार देवताओं में अग्रपूज्य शिव–पार्वती के पुत्र विनायक का जन्म भाद्रपक्ष शुक्ल एकादशी तक श्री गणेशोत्सव मनाया जाता है ।

पुराणों में भगवान श्री गणेश के मंलमय अवतारों का वर्णन है । भगवान श्री गणेश को परब्रह्म का रूप माना जाता है । अलग–अलग युगों में श्री गणेश के अलग–अलग अवतारों ने जगत के शोक और संकट का नाश किया । आइए जाने भगवान श्री गणेश के बत्तीस मंगलकारी स्वरूप –

**श्री बालगणपति, श्री तरुण गणपति, श्री भक्त गणपति**

**श्री सिद्धि गणपति, श्री विघ्न गणपति, श्री उच्चिष्ठ गणपति**

**श्री हेरंब गणपति , श्री उद्ध गणपति, श्री क्षिप्र गणपति**

**श्री लक्ष्मी गणपति, श्री विजय गणपति, श्री महागणपति**

**श्री नृत्य गणपति, श्री एकाक्षर गणपति श्री हरिद्रा गणपति**

**श्री नयैक्ष गणपति, श्री वर गणपति, श्री ढुंडी गणपति**

**श्री क्षिप्र प्रसाद गणपति , श्री ऋण मोचन गणपति, श्री द्विभुज**

**गणपति, श्री उदण्ड गणपति, श्री दुर्गा गणपति श्री त्रिभुजगणपति**

**श्री योग गणपति श्री सिंह गणपति श्री संकटहरण गणपति**

जो अपनी विपत्ति से भागना नहीं चाहता वह छोटी सवारी रखे, पेट इतना बड़ा रखे कि सबमें प्रिय अप्रिय वाचन धारण कर सके । बारीक आँखों से अपने इकट्ठे किए हुए मतों से जगत की प्रीति को अपने में चुपचाप देखने की इच्छा करे इस बात को बताने वाला ही शासक हो सकता है–

**यो नो धावितु मीहते स्वविपदः स क्षुद्रपत्तोभवेत् ।**

**सर्वस्यापि धर्त् प्रियाप्रियवच्श्येत् स्यान्महाकुक्षिभूत् ।।**

**सुक्ष्माक्षै निर्भृतं दिदृक्षतु जगत्प्रीतिं मतैः स्वार्जितैः ।**

**इत्युद्घोघितवस्तुतत्वविबुधः स्यात् स्यातृपंक्तिवितस्थितः ।। 48 ।।**

जिसने ब्रह्मा जी की रूचि प्रारम्भ करते हुए एक यज्ञ में रक्षा की और दक्षिणा में सिद्धि–बुद्धि नाम की दो कन्यायें ली जो केवल पावों की सेवा और चँवरों के हवा के लिये थी वह सम्भोग पर विजय प्राप्त करने वाला इस अपने शासन में वैसा प्रवेश करता रहें । श्री गणेश , गजानन, लम्बोदर, गणपति और विनायक जैसे कई सुन्दर नामों से पुकारे जाने वाले इन देवता की हर बात निराली है । आइये जानते हैं उनसे जुड़ी दिलचस्प बातें–

1. श्री गणेश को लाल व सिंदूरी रंग प्रिय है ।
2. दूर्वा के प्रति विशेष लगाव है ।
3. चूहा इनका वाहन है बैठे रहना इनकी आदत है ।
4. लिखने में इनकी विशेशज्ञता है । पूर्व दिशा अच्छी लगती है ।
5. लाल रंग के पुष्प से शीघ्र खुश हो जाते हैं ।
6. प्रथम स्मरण से कार्य को निर्विघ्न संपन्न करते हैं ।
7. दक्षिण दिशा की ओर मुंह करना पसंद नहीं है ।
8. चतुर्थी तिथि इनकी प्रिय तिथि है ।
9. स्वास्तिक इनका चिन्ह है ।
10. सिंदूर व शुद्ध घी की मालिश इनको प्रसन्न करती है ।
11. गृहस्थाश्रम के लिए ये आदर्श देवता हैं । कामना को शीघ्र कर देते हैं ।

गणपति शासन में गणेश जी अन्धकार को दूर करने का व्रत धारण करता है । जो प्रतिवर्ष सजकर दीपावली का सा दीपक होकर शोभा देता है वह गणशासन में गणपति है । होली सी खेलते हुए गणपति अपने शासन में विजय करते रहे । सिन्दूर हल्दी तथा अनेक प्रकार के चूर्ण और पिचकारी से छोड़े हुए जलों से जिसका मुख सींचा जा रहा है ।

ज्योतिष्शास्त्र के अनुसार गणेश जी को केतु के रूप में जाना जाता है । केतु एक छाया ग्रह है, जो राहु नामक छाया ग्रह से हमेशा विरोध में रहता है, बिना विरोध के ज्ञान नहीं आता है और बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं है, गणेश जी को मानने वालों का मुख्य प्रयोजन उनको सर्वत्र देखना है, गणेश अगर साधन है तो संसार के प्रत्येक कण में वह विद्यमान है । उदाहरण के लिए तो जो साधन है वही गणेश है, अनाज को पैदा करने के लिए किसान की आवश्यकता होती है, तो किसान गणेश हैं, किसान को अनाज बोने और निकालने के लिए बैलों की आवश्यकता होती है तो बैल भी गणेश हैं । अनाज बोने के लिए खेत की आवश्यकता होती है, तो खेत गणेश हैं, अनाज को रखने के लिए भण्डारण स्थान की आवश्यकता होती है तो भण्डारण का स्थान भी गणेश हैं, अनाज के घर में आने के बाद उसे पीसकर चक्की की आवश्यकता होती है तो चक्की भी गणेश हैं । चक्की से निकालकर रोटी बनाने के लिए तवे और चीमटे की आवश्यकता होती है तो ये दोनों ही गणेश हैं । खाने के लिए हाँथ की आवश्यकता होती है तो हाथ भी गणेश हैं, मुँह में खाने के लिए दांतों की आवश्यकता होती है, तो दांत भी गणेश हैं, कहने के लिए जो भी साधन जीवन में प्रयोग किये जाते हैं वे सभी गणेश हैं । यही है 'गणपति सम्भवम्' में गणपति शासन उत्कर्ष । यानि ये शासन क्रमबद्ध रूप से चलकर मनुष्य के जीवन में भी क्रमबद्धता को संचालित करते हैं । कहने के लिए जो भी साधन जीवन में प्रयोग किये जाते हैं वे सभी गणेश हैं, अकेले शंकर-पार्वती के पुत्र और देवता ही नहीं हैं ।

यह गणेश देव मन्त्र-यन्त्र तन्त्रों के ही वश में चलते हैं अत: यह गणतंत्र इनको प्रिय है, जिसमें मनुष्य के पांवों की चाल भी बार-बार फूंक मारकर ही हो पाती है, अर्थात् बड़ी सावधानी से चलना होता है । और मन्त्रादिकों में भी फूंके लगाई जाती हैं । अत: ढोल की सी अप्रिय दुं, दुं ध्वनि न करें किन्तु किसी तालस्वर के साथ गाये वही गणशासन सुन्दर, आसन पाकर स्थिर होता है ।

**देवस्तन्त्रक मन्त्र यन्त्र वशगस्तन्त्राठयमेतत् प्रियम् ।**
**यत्र स्याद् जनपदगति: जनपदे फूल्कार पूर्वां मुहु: ।।**
**दुं दुं दुन्दिभि-दुर्ध्वनि परिहरेत् गामेच्च तालस्वरै: ।**
**तत् स्याच्छी गणराजवत् स्थिरतमं स्वं शासनं स्वाऽसानम् ।**

एक माता दीपक और फूल के समान अपने पुत्र को हाथ से स्वयं देती है दूसरी उसको अपने पीछे सुलाकर आँखें बन्द करती है, दोनों ही अपने-अपने कुल के अनुसार बलिदान कर रही है । जो हथिनी सोई थी वह मेरे मत में राग और त्याग दोनों से मुक्त थीं । अत: उस श्रेष्ठ हथिनी की बलिविधि नवीन और अछिक भव्य है तभी तो वह गिरिजा के साथ एक हिंडोले में स्थान लेकर झूलती हुई माँ कहलाती है । इस प्रकार गणपति शासन पहले थी अधिक बलिदानपूर्वक हो चुका है

। उसी के समान अपनी ऊँची बलियों का अधिक से अधिक दान करता हुआ ही यह गणपति शासन भारत को चमकाता है ।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची**


1. गणपति सम्भवम् - आचार्य प्रभुदत्त शास्त्री, अर्चना प्रकाशन- रामदास पेठ नागपुर
2. गणपति- सम्भवे- गणशासनोत्कर्षः- नवमः सर्गः (1)
3. गणपति-सम्भवे-गणशासनोत्कर्षः-नवमः सर्गः (2)
4. श्री गणेश द्वादश नाम स्त्रोत
5. गणपतिसम्भवे-गणशासनोत्कर्षः-नवमः सर्गः (3)